मन में हो सुमिरन एक तेरा लाडली

मन में हो सुमिरन इक तेरा लाडली ,
बीते यू जीवन यह मेरा लाड़ली,
बस इतनी तमन्ना है बस इतना कहना है,
मन में हो सुमिरन इक तेरा लाडली
बीते यू जीवन बस मेरा लाडली ॥

जब भी मुख में खोलूं श्री राधे राधे बोलूं
प्रेम सुधा रस अमृत को घोलू
अमृत को पीना है मस्ती से जीना है
मन में हो सुमिरन इक तेरा लाडली ,
बीते यू जीवन यह मेरा लाडली ॥

राधे राधे राधे का सुमिरन चलेगा
आठों पहर इसका चिन्तन रहेगा
चाहे सुबह सवेरा हो, चाहे सांझ अंधेरा
हो मन में हो सुमिरन इक तेरा लाडली ,
बीते यू जीवन यह मेरा लाडली ॥

सुनते हैं राधे सहारा बनती हो,
डुबते हुए का किनारा बनती हो
भव पार मुझे करना
मेरे पापों को हरना
मन में हो सुमिरन इक तेरा लाडली ,
बीते यू जीवन यह मेरा लाडली॥

चाहें जो समझना ये मन तेरा हो गया
सुमिरन की मस्ती में मन मेरा खो गया
श्री सर्वेश्वर मण्डल,
करता विनती हर पल ,
मन में हो सुमिरन इक तेरा लाडली ,
बीते यू जीवन बस मेरा लाडली ॥

भजन भाव रचयिता
मोहन प्रकाश काबरा, किशनगढ़
श्री राधासर्वेश्वर संकीर्तन मंडल , किशनगढ़

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/35843/title/man-me-ho-sumiran-ek-tera-ladli

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |